आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-11-14

बापदादा की आज कि अव्यक्त मुरली का सार है - सर्व प्राप्तियों की स्मृति इमर्ज कर अचल स्थिति का अनुभव करो और जीवन मुक्त बनो.

इस अमूल्य ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियों ---

१. स्वयं परमात्मा कर रहे है हमारी महिमा - बापदादा ने कहा, आज भाग्य विधाता बाप अपने विश्व में सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं. हर बच्चे के भाग्य की महिमा स्वयं भगवान गा रहे हैं. बाप की महिमा तो विश्व की सारी आत्माये गाती हैं लेकिन आप बच्चों की महिमा स्वयं परमात्मा-बाप करते हैं. ऐसे कभी स्वप्न में भी सोचा कि हमारा इतना श्रेष्ठ भाग्य बना हुआ है लेकिन बना हुआ था, बन गया.

२. स्वयं परमात्मा द्वारा हम ब्राह्मणों की रचना - आप हर एक भाग्यवान बच्चा अनुभव और फ़खुर से कहते हो कि हम शिव वंशी ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियां हैं. हमको मालूम है कि हमें बापदादा ने कैसे रचा! फ़लक से कहते भी है कि हमको शिव बाप ने ब्रह्मा बाप द्वारा रचा इसलिए हम भगवान के बच्चे हैं. भगवान से हम डायरेक्ट मिलते हैं, न सिर्फ परम-आत्मा वा भगवान हमारा बाप है लेकिन वह तो हमारे बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरु भी हैं.

३. बाप के रुप में परमात्म पालना का भाग्य - बाप के रुप में परमात्म पालना का अनुभव कर रहे है. यह परमात्म पालना सारे कल्प में सिर्फ इस ब्राह्मण जन्म में हम बच्चों को प्राप्त होती है, जिस परमात्म पालना में आत्मा को सर्व प्राप्ति स्वरूप का अनुभव होता है. परमात्म प्यार सर्व संबंधों का अनुभव कराता है. परमात्म प्यार अपने देह भान को भी भूला देता, साथ-साथ अनेक स्वार्थ के प्यार को भी भुला देता है. ऐसे परमात्म प्यार, परमात्म पालना के अन्दर पलने वाली भाग्यवान आत्मायें है.

४. बाप से शिक्षक के रुप मे ईश्वरीय पढ़ाई का भाग्य - हम आत्माओं का कितना श्रेष्ठ भाग्य है जो स्वयं बाप अपने वतन को छोड़ हम गॉडली स्टूडेन्टस को पढ़ाने आते हैं. हम भाग्यवान

बच्चों के लिए रोज बाप शिक्षक बन सवेरे-सवेरे दूरदेश से हमारे पास पढ़ाने आते है और पढ़ाते भी कितना सहज हैं. दो शब्दों की पढ़ाई है – मैं और बाप, इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष की सारी नॉलेज समाई हुई है. बेहद के बाप कि पढ़ाई से दिमाग भी हलका बन जाता है. इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है. इस पढ़ाई से तीनों लोकों की नॉलेज मिल जाती है. यह ईश्वरीय पढ़ाई सारे कल्प में एक ही बार मिलती है तो कितना महान भाग्य है हमारा.

५. बाप से सतगुरु के रुप में श्रेष्ठ श्रीमत् और वरदानों की प्राप्ति का भाग्य - सतगुरु द्वारा ऐसी श्रेष्ठ श्रीमत् मिलती है जो सदा के लिए क्या करूं, कैसे चलूं, ऐसे करूं या नहीं करूँ, क्या होगा....यह सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब मिल जाता है - फालो फादर. साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फालो करो. दोनों बाप और दादा को फालो करना अर्थात क्वेश्चन मार्क समाप्त होना वा श्रीमत् पर चलना. सतगुरु द्वारा हर रोज हमें वरदान मिलता है.

बापदादा ने कहा अचल और जीवन मुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए यह ईश्वरीय प्राप्तिओं को सदा अपनी बुद्धि में इमर्ज रखो तो मेहनत से बच जायेंगे और पास विद ऑनर बन जायेंगे.

अन्त में बापदादा ने कहा, चारों और के अति श्रेष्ठ भाग्यवान, परमात्म पालना के अधिकारी आत्मायें, परमात्म पढ़ाई के अधिकारी, परमात्मा सतगुरु के वरदानों के अधिकारी, सदा ड्रढ़ता द्वारा सफलता के अधिकारी, सदा अखण्ड योगी, अचल योगी, सदा विश्व परिवर्तन की जिम्मेदारी के ताजधारी, सदा सर्व प्राप्तियों को इमर्ज रुप में अनुभव करने वाले ऐसे विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते. ऐसे योग्य बनाने वाले बापदादा को हम रुहानी बच्चों की नमस्ते.

शुक्रिया बापदादा आपका पदमापदम शुक्रिया.

ॐ शांति.